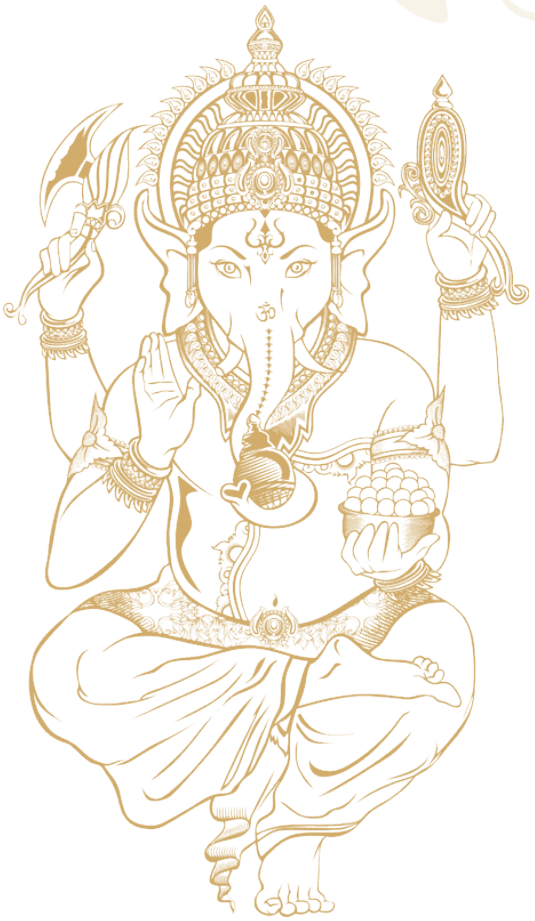

Daughter of Vivek pal bhaiya

17 Dec 2025

07:20 AM

Gorakhpur

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121417601**

तिथि 17/12/2025 **समय** 07:20:00 **वार** बुधवार **स्थान** Gorakhpur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:15
अक्षांश 26:45:00 उत्तर **रेखांश** 83:23:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:03:32 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	13:07:20 घं
वेलान्तर	00:03:53 घं
सूर्योदय	06:38:55 घं
सूर्यास्त	17:06:31 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	पौष
पक्ष	कृष्ण
तिथि	13
नक्षत्र	विशाखा
योग	सुकर्मा
करण	गर

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	व्याघ्र
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	सर्प
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	ते-तेजिका
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-ताम्र
होरा	बुध
चौघड़िया	लाभ

विंशोत्तरी

गुरु 5वर्ष 10मा 1दि

गुरु

17/12/2025
19/10/2031

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	17/12/2025
शुक्र	01/05/2026
सूर्य	18/02/2027
चन्द्र	19/06/2028
मंगल	25/05/2029
राहु	19/10/2031

योगिनी

धान्या 1वर्ष 1मा 4दि

धान्या

17/12/2025
21/01/2027

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	17/12/2025
सिद्धा	20/02/2026
संकटा	21/10/2026
मंगला	21/11/2026
पिंगला	21/01/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			09:40:44	धनु	मूल	3	केतु	शनि	---	0:00			
सूर्य			01:08:42	धनु	मूल	1	केतु	शुक्र	मित्र राशि	1.26	कलत्र	पितृ	क्षेम
चंद्र			28:28:07	तुला	विशाखा	3	गुरु	शुक्र	सम राशि	1.18	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल		अ	07:06:31	धनु	मूल	3	केतु	राहु	मित्र राशि	1.23	पुत्र	भ्रातृ	क्षेम
बुध			12:31:15	वृश्चि	अनुराधा	3	शनि	मंगल	सम राशि	1.30	मातृ	ज्ञाति	सम्पत
गुरु	व		28:55:55	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	सूर्य	शत्रु राशि	1.19	आत्मा	धन	जन्म
शुक्र		अ	26:12:06	वृश्चि	ज्येष्ठा	3	बुध	गुरु	सम राशि	0.78	भ्रातृ	कलत्र	विपत
शनि			01:15:24	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	मंगल	सम राशि	1.06	ज्ञाति	आयु	जन्म
राहु	व		18:24:21	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	चंद्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	अतिमित्र
केतु	व		18:24:21	सिंह	पू०फाल्गुनी	2	शुक्र	राहु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	प्रत्यारि

लग्न-चलित

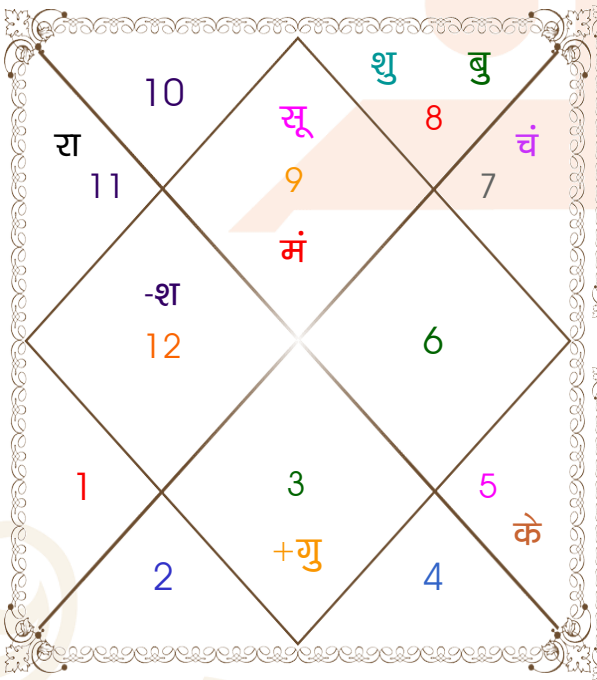

चन्द्र कुंडली

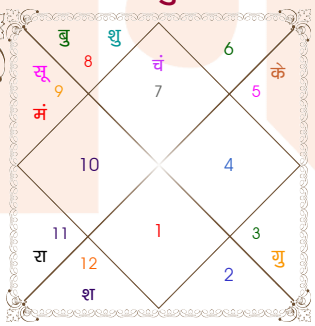

नवमांश कुंडली

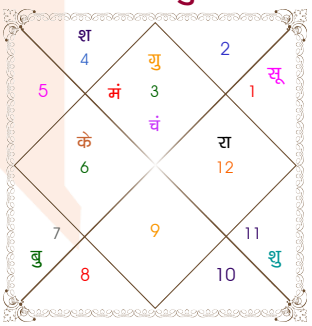

सर्वाष्टकवर्ग

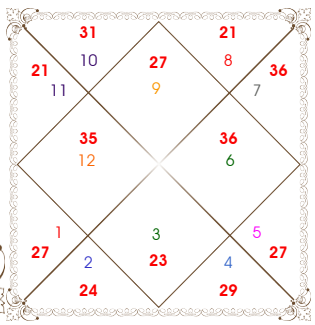

दशमांश कुंडली

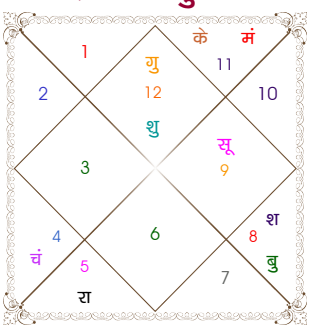

Jyotirvid Prabhat Tripathi (निधिवन ज्योतिष केंद्र)
Netaji Subhash Chandra Bose Nagar Gorakhnath Gorakhpur
9918060251
sunastrology01@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म विशाखा नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि तुला तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि व्याघ्र, गण राक्षस, वर्ग सर्प, वर्ण शूद्र तथा नाड़ी अन्त्य होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का आधाक्षर "ते" या "तै" से प्रारम्भ होगा।

आप अपने पति को पूर्ण रूप से वश में रखेंगी। वे समस्त सांसारिक कार्यकलापों की आपके निर्देश तथा सलाह से ही सम्पन्न करेंगे। बिना आपकी आज्ञा के वे किसी भी कार्य को स्वयं सम्पन्न नही करेंगे। इस प्रकार आपका उनके ऊपर पूर्ण नियंत्रण रहेगा। अभिमानी प्रवृति से भी आप युक्त रहेंगी तथा यदा कदा जीवन में इसका प्रदर्शन अन्य जनों के समक्ष सम्पन्न करती रहेंगी। आपके सभी शत्रु आपसे अत्यन्त ही भयभीत से रहेंगे तथा उन पर विजय प्राप्त करने में आप अधिकांश सफल रहेंगी। आपका स्वभाव क्रोध से भी परिपूर्ण रहेगा तथा कभी कभी छोटी बातों में उत्तेजित होना तथा क्रोध का प्रदर्शन करना आपके लिए सामान्य बात होगी।

गर्वी दारवशो जितारिरधिक क्रोधी विशाखोद्भवः।
जातक परिजातः

अर्थात् विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक घमंड, हमेशा अपनी पत्नी के वश में रहने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला तथा अत्यधिक क्रोधी स्वभाव का होता है।

आपके मन में यदा कदा दूसरे लोगों के प्रति अनावश्यक वैमनस्य का भाव विद्यमान रहेगा। यदि कोई भी मनुष्य कोई अच्छा कार्य या सफलता अजित करता हैं तो आपके मन में ईर्ष्या की भावना जागृत हो जाएगी। अन्य जनों की वस्तुओं अथवा किसी भी चीज को देखकर आपके मन में अनायास ही लोभ का भाव उत्पन्न हो जाएगा। आपका शरीर कान्ति से सुशोभित रहेगा तथा बोलने में आप अत्यन्त ही चतुर रहेंगी तथा अपनी इसी चतुराई से आप अपने अधिकांश कार्यों को सिद्ध करने में सफल होंगी। आपका स्वभाव विवाद युक्त भी होगा तथा अन्य लोगों से आपका विवाद चलता रहेगा।

ईर्ष्युर्लुब्धोः द्युतिमान्वचनपटुः कलहकृद्विशाखासु।।
बृहज्जातकम्

अर्थात विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक ईर्ष्या तथा द्वेष करने वाला, लोभी, कान्तियुक्त, वाक्चतुर तथा कलहप्रिय होता है।

आपके मन में धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठा का भाव विराजमान रहेगा तथा देवताओं के प्रसन्न करने के विभिन्न नित्य घर में हवनादि क्रियाएं सम्पन्न करती रहेंगी। साथ ही आपकी मित्रता का क्षेत्र सीमित रहेगा।

सदानुरक्तोग्निसुरक्रियायां धातुक्रियायामपि चोग्रसोम्यः।

यस्य प्रसूतौ च भवेद्विशाखा सखा न कस्यापि भवेन्मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवादि पूजन के निमित हवनादि कार्यों में रत रहने वाला, धातुक्रिया में कभी उग्र तो कभी सौम्यता का प्रदर्शन करने वाला तथा किसी का भी मित्र नहीं होता है।

आपका हृदय में दया एवं करूणा की अल्पता रहेगी साथ ही अन्य सामाजिक जनों में आपका विवाद भी होता रहेगा। इसके अतिरिक्त अन्य सामाजिक जनों से भी आपके मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे।

अतिलुब्धोडतिमानी च निष्ठुरः कलहप्रियः।
विशाखायां नरो जातः वैश्याजन रतो भवेत।।
मानसागरी

अर्थात विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अति लोभी, घमंडी, निष्ठुर, झगड़ा करने वाला तथा अन्य स्त्रियों से संबंध रखने वाला होता है।

आप स्वर्ण पाद में पैदा हुई हैं। स्वर्ण पाद में पैदा होने के कारण जातक कई प्रकार से जीवन में दुःख एवं कष्ट प्राप्त करता है तथा इसमें उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता एवं धनाभाव से भी नित्य दुःखी रहता है। साथ ही जीवन में उसे सुखसंसाधनों की भी अल्पता रहती है। जिससे उसके मन में नित्य तनाव व्याप्त रहता है। साथ ही प्रत्येक क्षेत्र में उसे अत्याधिक परिश्रम के द्वारा ही सफलता अर्जित हो सकती है। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभ वर्ग में स्थित है। अतः इससे आपको अशुभ फल अल्प तथा शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

अतः आप जीवन में सम्पूर्ण सुखसंसाधनों से युक्त रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। साथ ही धन ऐश्वर्य एवं नौकर चाकरों से भी आप सम्पन्न रहेंगी। आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी तथा एक धनवान महिला के रूप में समाज में ख्याति अर्जित करेंगी। सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथोचित सम्मान भी प्रदान करेंगे। आप विभिन्न प्रकार के वाहनादि से भी सुशोभित रहेंगी। आप हमेशा सद्गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी। आपके पति तथा पुत्र भी सुन्दर गुणवान एवं सम्मानित रहोंगे। साथ ही सेवक गण भी गुणसम्पन्न होंगे। आपकी आयु दीर्घायु होगी तथा आपके लिए लाभमार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेगी। इसके अतिरिक्त पुत्रादि सुख को आप प्राप्त करने में भी सौभाग्यशाली रहेंगी।

तुला राशि में उत्पन्न होने के कारण आप शरीर तथा मुख से देखने में सुन्दर रहेंगी। आपकी नासिका उन्नत तथा आखें भी बड़ी बड़ी रहेंगी। समाज में नाना प्रकार के वाहनादि साधनो से भी आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी तथा सुखपूर्वक उनका उपभोग करेंगी। वाहन एवं भूमि से आप बलवती होकर इनसे पूर्ण धनार्जन करेंगी तथा समस्त सुखैश्वर्य एवं

वैभव से सुशोभित रहेंगी। आपके पराक्रमी स्वभाव को देखकर सभी लोगों के आपके प्रति मन में आदर का भाव रहेगा तथा आपसे प्रभावित भी रहेंगे साथ ही पति को आप पूर्ण रूप से अपने वश में रखेंगी। आप नाना प्रकार के कार्यों को करने में अत्यन्त ही दक्ष होंगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा एवं पूजा का भाव विद्यमान रहेगा तथा जीवन में यत्नपूर्वक आप अपनी इस प्रकृति का अनुपालन करेंगी। आप धन धान्यार्जन करके उनके संग्रह करने की प्रवृति से भी युक्त रहेंगी एवं बन्धु वर्ग के लिए नित्य कल्याणकारी कार्यों को करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

आप देवता विप्र तथा सज्जन लोगों की सेवा कार्य में हमेशा तत्पर रहेंगी। आप एक उत्तम कोटि की विदुषी होंगी तथा पवित्रतापूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगी। आपका शरीर सर्वदा सुगन्धित रहेगा तथा शरीर के अधिकांश अंग कमजोर रहेंगे। घूमने तथा यात्रा करने के प्रति आप रूचिशील रहेंगी तथा इसी में अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगी। क्रय विक्रय कार्य अथवा व्यापारिक कार्यों में आप अति प्रवीण होंगी। अपने संबंधियों तथा बन्धुवर्ग के हितकार्यों में आप तल्लीन रहेंगी परन्तु बाद में इन्हीं लोगों के द्वारा आप उपेक्षित भी होंगी।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरूक्।
बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आपके अधिकांश कार्य धैर्यपूर्वक सम्पन्न होकर सफल होंगे शीघ्रता या चंचलता से कार्य करना आपको पसन्द नहीं होगा। न्याय के प्रति आप पूर्ण रूप से आस्थावान रहेंगी तथा निष्पक्ष रूप से अपनी बातें अन्य लोगों पर प्रकट करेंगी। आपकी निष्पक्षता तथा न्यायप्रियता को देखकर अन्य लोग अपने विवादों को सुलझाने के लिए आपको मध्यस्थ या पंच मनोनीत करेंगे। आप भी अपनी इस जिम्मेदारी को ईमानदारी से निर्वाह करेंगी। इसके अतिरिक्त आपकी संतति अल्प सख्यां में रहेगी एवं भाग्योदय भी काफी देर से होगा।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

शारीरिक कद से आप मध्यम ही रहेंगी। सरकार के उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग को प्रसन्न करने में आप सफल रहेंगी तथा उनसे पूर्ण आदर तथा सहयोग प्राप्त करेंगी। यदा कदा

आप अतिशय मात्रा में बोलेंगी जो आपके सामाजिक प्रभाव में न्यूनता प्राप्त करेगा। आप ग्रहनक्षत्र संबंधी शास्त्रों अथवा ज्योतिष शास्त्र की भी ज्ञाता होंगी तथा बन्धु एवं सेवक वर्ग के प्रति आपके मन में हमेशा स्नेह भाव रहेगा।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

कभी कभी आप अनुचित अवसर पर अपने क्रोध का प्रदर्शन करेंगी। अतः बाद में इसके लिए आप पश्चाताप करेंगी। आप अत्यन्त ही प्रिय वाणी बोलने वाली होंगी। अतः लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे तथा आपकी हादिक प्रशंसा करेंगे। आपके हृदय में दया एवं करूणा की भावना भी विद्यमान रहेगी अतः समय समय पर यथा शक्ति अपनी इस प्रवृति का पालन करेंगी तथा दीन दुःखियो की सेवा करेंगी परन्तु आपकी आर्थिक स्थिति प्रायः विषम रहेगी तथा धनागमन में अनिश्चिता रहेगी। आपके नेत्र भी चंचलता से युक्त रहेंगे। आप घर में बलवती तथा बाहर निर्बलता की अनुभूति करेंगी। मित्रो में आप अत्यन्त प्रिय रहेंगी तथा स्वयत्न से विदेश में भी निवास करेंगी।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येळति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप अपने सम्पूर्ण जीवन काल में नाना प्रकार के वाहन संसाधनो से युक्त रहेंगी तथा उनका उपभोग करेंगी। साथ ही आपकी प्रकृति दानशीलता से भी युक्त रहेगी एवं समयानुसार आप इस प्रवृति का पालन करती रहेगी। प्रिय की आप अत्यन्त प्रिया रहेंगी तथा उनसे पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगी।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

राक्षस गण में पैदा होने के कारण आप कभी कभी व्यर्त बोलेंगी। आपका चित में भी दया एवं करूणा के भाव की सामान्यतया अल्पता ही रहेगी। आप छोटी छोटी बातों में शीघ्र ही उत्तेजित हो जाएगी तथा अपने क्रोध का प्रदर्शन करेंगी। साथ ही आप एक साहसी महिला भी होंगी तथा अपने अधिकांश कार्यों को साहसपूर्वक सम्पन्न करेंगी। आप स्वयं भी साहसिक कार्यों को करने के लिए उत्सुक रहेंगी तथा शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम होने के कारण आप बलवती भी रहेंगी तथा अन्य लोगों से प्रायः आपका विवाद भी होता रहेगा। अतः संयमपूर्वक अन्य जनों से

व्यवहार करें।

जीवन में यदा कदा आप प्रमेह रोग से पीड़ित हो सकती हैं। आपकी आकृति भी विशेष सुन्दर नहीं होगी तथा वाणी कभी कभी अत्यन्त ही कठोर रहेगी जिससे श्रोता आपसे रूष्ट रहेंगे। अतः यत्नपूर्वक अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का ही प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

व्याघ्र योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वच्छन्दता पूर्वक कार्य करने वाली होगी तथा अन्य जनों के हस्तक्षेप या दवाब से किसी भी कार्य को सम्पन्न नही करेंगी। धनार्जन करने में आप सर्वथा यत्नपूर्वक तत्पर रहेगी। आपके अन्दर अच्छे गुणों की ग्रहण करने की भी शक्ति होगी तथा उन्हे आप शीघ्र ग्रहण करेंगी। अपने कार्यक्षेत्र में आप पूर्ण प्रशिक्षित रहेंगी अतः अन्य सभी लोग आपको पूर्ण मान सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही नाना प्रकार के सुख ऐश्वर्य तथा वैभव से भी आप सुसम्पन्न रहेंगी। परन्तु आप अपने मुख से अपनी प्रशंसा करने वाली होंगी। अतः लोग आपकी इस प्रवृति को अच्छा नही समझेंगे। इससे आपकी समाज के अन्दर सम्मान में कमी आएगी।

स्वच्छन्दोडर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् व्याघ्र योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, अर्थसंग्रह में तत्पर, गुणों को ग्रहण करने वाला, दीक्षित, वैभव युक्त तथा अपने ही मुख से स्वयं अपनी प्रशंसा करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा एकादश भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। जीवन में वे प्रत्येक क्षेत्र में आपका यत्नपूर्वक पूर्ण सहयोग करती रहेंगी। आपके आर्थिक साधनों की अभिवृद्धि में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आप पूर्ण आर्थिक लाभ एवं अन्य प्रकार से सुखार्जन करेंगी।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेंगी एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए भी आप प्रायः तत्पर रहेंगी। जीवन में आप हर प्रकार से उनकी सहायता एवं सहयोग भी करेंगी तथा अवसरानुकूल उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा आपसी मतभेद अत्यन्त ही अल्प मात्रा में रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपके प्रति उनके हृदय में वात्सल्य भाव रहेगा तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप जीवन में पिता के द्वारा यश अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त पिता के द्वारा आपके स्वास्थ्य का विशेष ध्यान भी रखा जाएगा।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगी तथा उनकी सेवा एवं आज्ञा पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथापि यदा कदा अल्प मात्रा में सैद्धान्तिक मतभेद विद्यमान रहेंगे जिससे यदा कदा विवाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। साथ ही आप जीवन में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक व्याकुलता से वे पीड़ित रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान की भावना विद्यमान रहेगी। आपके संबंध प्रायः मधुर ही होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प समय के लिए संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। आप एक दूसरे से प्रायः सहमत रहेंगे एवं विश्वास भी करेंगे। इसके साथ ही आप भी हमेशा सुख दुःख में यथाशक्ति उनकी सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, शतभिषा नक्षत्र, शुक्ल योग, तैतिल करण, गुरुवार, चतुर्थ प्रहर मीन राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा के प्रति भी सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में विफलता आदि अशुभ फल हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी जी की उपासना करनी चाहिए तथा शुक्रवार के उपवास भी रखने चाहिए। साथ ही हीरा, सोना, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, चावल, दूध आदि पदार्थो का भी यथाशक्ति श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।